

आर.एन.आई. नं. RAJHIN 16886

पशु आहार एवं चारा बुलेटिन

पशुधन चारा अंशोधन प्रबन्धन एवं तकनीक केन्द्र
राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
बीकानेर



वर्ष : 04

जुलाई-सितम्बर, 2018

अंक : 01



प्रो. बी.आर. छीपा

कुलपति की कलम से...

वर्षा जल संरक्षण व उसका उचित प्रबन्धन समय की आवश्यकता

प्रिय किसान एवं पशुपालक भाइयों और बहनों। राम-राम सा।

जैसा कि हम सभी जानते हैं की खेती-बाड़ी तथा पशुपालन में जल की महत्वपूर्ण भूमिका है। जल की कमी तथा उपलब्ध जल के उचित उपयोग के अभाव में आज हमारे देश में प्रति हैक्टेयर तथा प्रति पशु उत्पादन कई प्रगतिशील देशों के मुकाबले में बहुत कम है। हम प्रायः

यह सुनते व पढ़ते आये हैं कि जल ही जीवन है अर्थात् जल नहीं तो जीवन, खेती-बाड़ी तथा पशुपालन कुछ भी सम्भव नहीं है। रहीमदास जी ने भी अपने दोहों में जल के महत्व को



बतलाते हुए लिखा था कि "रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून। पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष, चून।।" अर्थात् पानी को बचा कर रखे, क्योंकि पानी बिना सब कुछ सूना है। यदि पानी ही न रहे तो मनुष्य जीवन और धन-धान्य किसी में भी उन्नति नहीं हो सकती। अतः हमें जल के महत्व को समझते हुए इसके संरक्षण के उपाय करने होंगे। सर्वप्रथम हमें वर्षा जल को बचाना होगा। इसके लिए वर्षा जल को घरों की छतों से जल कुण्ड में एकत्रित करने की व्यवस्था करनी होगी। खेतों में भी जल के टांके बना कर, मेंड़बन्दी करके, खेत के ढाल वाले स्थान पर पॉलिथीन शीट का प्रयोग करते हुए छोटे तालाब बना कर, एनीकेट अथवा खड़ीन इत्यादि का निर्माण करके जल संरक्षण करना होगा। खेत का पानी खेत में तथा गाँव का पानी गाँव में बचा कर उसे संग्रहित करने से हम जल आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ सकते हैं। गाँवों में वर्षा का पानी बह कर बाहर जाने के बजाए गाँवों के निवासियों, पशुओं और खेतों के काम आए, इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए राज्य सरकार द्वारा "मुख्यमंत्री जल स्वावलम्बन अभियान" की शुरुआत की गई है। हमारे विश्वविद्यालय परिसर में भी वर्षा जल को संग्रहित करने के लिए जल कुण्डों का निर्माण किया गया है। आप लोग भी वर्षा जल का संरक्षण करें, जिससे कि यह संरक्षित जल पीने के लिए, खेती-बाड़ी तथा पशुपालन के काम में लाया जा सके। हमें वर्षा जल के संरक्षण के साथ-साथ संग्रहित व उपलब्ध जल का भी उचित प्रबन्धन करना होगा जिससे कि वर्षभर जल की उपलब्धता बनी रहे तथा भूमिगत जल स्तर भी बना रहे। आपको ज्ञात हो कि वनस्पति धारित भूमि में वर्षा जल का संचय वनस्पति रहित भूमि से ज्यादा होता है। अतः हमें गाँव की पड़त भूमि, चारागाह भूमि तथा अकृषि भूमि को वनस्पति विहीन होने से बचाना होगा। वन चारागाह विकास के लिए ग्राम वासियों को सामुदायिक वानिकी की कार्य योजना ग्राम पंचायत स्तर पर तैयार कर उसे क्रियान्वित करनी होगी। इससे हमारे आस-पास का पर्यावरण सुधरेगा तथा विकसित चारागाह भूमि पशु-पक्षियों व वन्य जीवों को आश्रय प्रदान करेगी।

जय हिन्द।

(बी.आर. छीपा)

॥ पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम् ॥

अप्रैल-जून, 2018 माह में चारे व पशु आहार के बाजार भाव

गुड़ रसकट व बिनोला खल में उछाल तथा तिल खल, सरसों खल व तूड़ी के भाव में रही गिरावट



इस तिमाही में अप्रैल माह से रबी फसलों के सूखे चारे की आवक चारा मण्डियों में बढ़ने के कारण तुड़ी, पराली, ज्वार तथा बाजरा चारे के भावों में गिरावट का रूख बना रहा, लेकिन दलहनी तथा पौष्टिक सुखे चारे जैसे मूंगफली चारा, फलकटी, सेवण, पाला तथा लूंग के भावों में तेजी रही। वर्षाकाल में हरे चारे की उपलब्धता होने तक यह तेजी बनी रहने की सम्भावना है। बीकानेर तथा चौमू अनाज मण्डियों में बिहार से मक्का की आवक बनी रहने तथा पंजाब, हरियाणा व उत्तर-प्रदेश से इस तिमाही के अन्त तक आवक शुरू होने के कारण इस के भावों में लगभग 50 रुपये प्रति क्विंटल की गिरावट दर्ज की गई। गर्मियों में मांग घटने से बाजरा के भावों में ज्यादा अन्तर नहीं पड़ा। गुजरात व उत्तर-प्रदेश में जायद बाजरा फसल से चारा लेने के पश्चात् दाना लेने का प्रचलन बढ़ गया है अतः इसकी आवक बनी रहने के कारण आगे भी इसके भावों में वृद्धि की सम्भावना कम है। तिल तथा सरसों की खल में कमजोर मांग के चलते 200-300 रुपये प्रति क्विंटल की गिरावट दर्ज की गई। बिनोला खल की मांग बढ़ने के कारण लगभग 150 रुपये प्रति क्विंटल की वृद्धि दिखाई दी। इस समय गन्ना उत्पादक क्षेत्रों के क्रेशरो में नया गुड़ बनना लगभग बंद हो चुका है तथा आवक कम होने के कारण गुड़ रसकट के भावों में तेजी रही। जून माह से नये गुड़ की आवक कोल्ड स्टोरेजों से हो रही है अतः इसके भावों में तेजी आगे भी बनी रहेगी। ज्वार दाना, ग्वार कोरमा तथा चूरी के भावों में आंशिक तेजी दर्ज की गई है। जिसका मुख्य कारण इन फसलों के भावों में वृद्धि होना है। आगामी वर्षा ऋतु को देखते हुए किसान भाइयों को सलाह दी जाती है कि वे हरे चारे की उन्नत किस्मों का प्रयोग करे तथा दलहनीय व अदलहनीय हरे चारे की मिलवा खेती कर पौष्टिक चारा प्राप्त करें।

बीकानेर व चौमू मण्डी के भाव (रुपये प्रति क्विंटल)

पशु चारे	बीकानेर			चौमू		
	अप्रैल	मई	जून	अप्रैल	मई	जून
गेहूँ चारा (तुड़ी)	450-500	400-500	400-450	550-650	500-550	425-500
धान चारा (पराली)	350-450	350-400	350-400	300-400	300-400	300-350
बाजरा चारा	500-600	500-550	500-550	525-575	450-550	450-550
ज्वार चारा	600-650	600-650	550-600	550-650	550-600	550-650
मूंगफली चारा एवं गुणा	750-850	750-850	750-900	-	-	-
ग्वार चारा	550-650	600-700	650-750	300-350	250-350	250-350
सेवण घास	750-850	750-850	800-900	-	-	-
खेजड़ी लूंग	850-950	800-900	950-1000	1350-1450	1200-1350	1250-1400
बेर पाला	1150-1250	1200-1400	1400-1500	-	-	-
पशु आहार व दाना						
मक्का	1350-1450	1350-1450	1300-1400	1325-1425	1350-1450	1300-1350
जौ	1200-1300	1200-1300	1225-1325	1250-1400	1250-1400	1300-1400
बाजरा	1250-1450	1350-1450	1350-1450	1150-1300	1150-1300	1200-1250
ज्वार	1500-1800	1700-2000	1700-2000	1600-1800	1550-1700	1700-1900
गुड़ रसकट	2450-2900	2450-3000	2600-3300	2500-2750	2500-2750	2600-3200
गेहूँ चापड़	1500-1700	1450-1650	1500-1700	1500-1700	1550-1650	1550-1700
राइस ब्रान (डी.ओ.आर.बी)	750-800	750-800	750-850	750-800	750-800	750-800
मूंगफली खल	1800-2000	1800-2200	1800-2100	1850-2050	1900-2250	1900-2200
सरसों खल	1600-1900	1500-1700	1500-1650	1750-1950	1550-1800	1550-1650
बिनोला खल	1450-1900	1400-1950	1650-2200	1650-1900	1600-1850	1650-2200
तिल खल	2500-2600	2200-2500	2200-2400	2300-2500	2300-2450	2200-2350
ब्रांडेड पशु आहार	1500-1900	1500-1900	1500-1900	1600-1900	1600-1900	1600-1900
मोठ चूरी	1325-1375	1325-1375	1350-1450	1350-1400	1350-1400	1350-1450
मूंग चूरी	1500-1600	1500-1650	1550-1700	1450-1550	1450-1550	1500-1650
उड़द चूरी	1175-1225	1225-1300	1250-1300	1150-1200	1150-1200	1200-1250
चना चूरी	1800-2000	1750-2000	1800-2000	1900-2100	1850-2000	1850-2100
ग्वार कोरमा	2500-2650	2550-2650	2550-2650	2500-2650	2550-2650	2550-2700



किसानों एवं पशुपालकों हेतु



जुलाई, अगस्त एवं सितम्बर माह के लिए सामयिक कृषि क्रियाएँ

वर्षा ऋतु हरा चारा फसलों व घासों की बुवाई तथा चारा उत्पादक झाड़ियों व वृक्षों के रोपण का सर्वश्रेष्ठ समय है। इस ऋतु का भरपूर लाभ लेने तथा ग्रीष्म ऋतु में चारा फसलों से अधिकतम उत्पादन लेने के लिए किसान भाइयों को चाहिए की मौसम पूर्वानुमान के आधार पर सामयिक कृषि क्रियाएँ अपनाएँ, जो कि इस प्रकार से हैं—

मक्का

मक्का स्वादिष्ट एवं पौष्टिक हरा चारा फसल है। इसका साइलेज बहुत अच्छा बनता है। यह अधिक उत्पादक तथा तेजी से बढ़ने वाली फसल है। इस फसल के लिए बलुई दोमट या दोमट मिट्टी जिसमें जीवांश प्रचुर मात्रा में हो, वायु संचार अच्छा हो तथा पानी का निकास उत्तम व उदासीन पी. एच. मान हो उपयुक्त होती है।



उन्नत किस्में:— अफ्रीकन टॉल, जे-1006, मोती कम्पोजिट, गंगा-2, 3, 5 व 7 आदि।

खेत की तैयारी:— एक गहरी जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करे तत्पश्चात् दो जुताई देशी हल या कल्टीवेटर से करके पाटा लगाकर खेत को समतल करें। अन्तिम जुताई से पूर्व भूमिगत कीड़े जैसे दीमक, सफेद लट व तना छेदक की रोकथाम हेतु फोरेट 10 जी अथवा कार्बोफ्यूरोन 3 जी 7.5 किग्रा प्रति हैक्टेयर की दर से भूमि में मिलावें। हरे चारे का अच्छा उत्पादन लेने हेतु 10-12 टन सड़ी हुई गोबर की खाद या कम्पोस्ट बुवाई से एक माह पूर्व प्रथम जुताई के समय डालना चाहिए।

बुवाई की विधि:— मक्का की हरा चारा फसल हेतु बीज दर 60 किग्रा प्रति हैक्टेयर पर्याप्त रहती है। बुवाई पूर्व बीजोपचार करना चाहिए, इसके लिए थायरम/केप्टान या ब्लाइटाक्स-50 की 2.5 से 3.0 ग्राम मात्रा प्रति किग्रा बीज की दर से उपचारित करना चाहिए। बीजों को कतार से कतार 25-30 सेमी दूरी रखते हुए बोया जाना चाहिए। चारा फसल हेतु बुवाई अगस्त माह तक भी की जा सकती है।

पोषक तत्व प्रबन्धन:— सामान्यतः नत्रजन 80-100 किग्रा, फॉस्फोरस 40-50 किग्रा, पोटाश 30-40 किग्रा तथा जिंक सल्फेट 25 किग्रा प्रति हैक्टेयर की दर से आवश्यकता रहती है। अतः नत्रजन की एक तिहाई मात्रा तथा शेष सभी तत्वों की सम्पूर्ण मात्रा बुवाई के समय भूमि में 10 सेमी गहराई तक ऊँरें। नत्रजन तत्व की शेष एक तिहाई मात्रा बुवाई के 30-35 दिन पश्चात् तथा शेष एक तिहाई मात्रा फसल में मांजर आने के पूर्व देनी चाहिए।

सिंचाई प्रबन्ध:— वर्षा नहीं होने की स्थिति में खरीफ मक्का में 10-12 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करें।

खरपतवार नियंत्रण:— मक्का की हरा चारा फसल में बुवाई के 30-35 दिन बाद एक निराई-गुड़ाई पर्याप्त है। जिन खेतों में खरपतवारों की अधिक समस्या रहती है, वहाँ एट्राजीन खरपतवारनाशी दवा 0.5 किग्रा सक्रिय तत्व की मात्रा को 500 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टेयर की दर से बुवाई के तुरन्त बाद समान रूप से छिड़काव करें।

कीट प्रबन्धन:— मक्का में तना छेदक कीट का प्रकोप अधिक होता है। इसके नियन्त्रण के लिए 5-7.5 किग्रा फोरेट 10 जी प्रति हैक्टेयर की दर से पोटा (शीर्ष भागों) में डालें या ट्राईकोग्रामा परजीवी 10, 20 व 30, दिन की फसल अवस्था पर तीन बार छोड़ें।

कटाई एवं उपज:— चारे के लिए मक्का की कटाई बुवाई के 60-75 दिन पश्चात् अथवा सिल्की अवस्था से लेकर दाने के दुधिया अवस्था तक करें। इस प्रकार मक्का की इस फसल से 350-450 क्विंटल प्रति हैक्टेयर हरा चारा प्राप्त होता है।

ज्वार

ज्वार सूखा सहनशील चारा फसल है। इसकी अच्छी उपज लेने के लिए दोमट, बलुई दोमट एवं भारी चिकनी मिट्टी जिसका पी. एच. मान 5.5-8.5 हो, उपयुक्त रहती है।



उन्नत किस्में:— एकल कटाई वाली किस्में— राज चरी-1 व 2, पूसा चरी-1, पी.सी.-6, 9 व 23 आदि तथा बहु कटाई वाली किस्में— एम.पी. चरी, एस.एस.जी.-59-3, पंत चरी-6, मीठी सूडान व हरा सोना आदि।

खेत की तैयारी:— मक्का चारा फसल के समान करें।

बुवाई की विधि:— ज्वार की हरा चारा फसल हेतु बीज दर 40-50 किग्रा प्रति हैक्टेयर पर्याप्त रहती है। बुवाई पूर्व बीजोपचार करना चाहिए, इसके लिए 2.0-3.0 ग्राम थायरम या वीटावेक्स दवा प्रति किग्रा बीज की दर से उपचारित करना चाहिए। बीजों को कतार से कतार 25 सेमी दूरी रखते हुए बोया जाना चाहिए। खरीफ चारा फसल का बुवाई समय जुलाई माह है।

पोषक तत्व प्रबन्धन:— एक कटाई की फसल में 60:30:30 एवं बहु कटाई के लिए 100:60:60 किग्रा की दर से क्रमशः नत्रजन, फॉस्फोरस तथा पोटाश तत्व का प्रयोग करें। बहु कटाई फसल में नत्रजन की आधी मात्रा एवं फॉस्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा बुवाई के समय तथा प्रत्येक कटाई के बाद नत्रजन की शेष मात्रा दो बराबर भागों में बांटकर छिड़काव करें।

सिंचाई प्रबन्ध:— खेत में पलेवा दे कर बुवाई करें। वर्षा नहीं होने की स्थिति में 12-15 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करें।

खरपतवार नियंत्रण:— मक्का चारा फसल के समान करें।

कीट प्रबन्धन:— शूट फलाई एवं तना छेदक कीट के नियंत्रण के लिए मिथाइल डेमेशन 25 ई.सी. 500 मिली अथवा क्लोरोपाइरीफास 30 ई.सी. एक लीटर अथवा कार्बोफ्यूरोन 3 जी 30 किग्रा प्रति हैक्टेयर की दर से प्रयोग में लें।

कटाई एवं उपज:— ज्वार की हरा चारा फसल में फूल निकलने से पूर्व कटाई नहीं करनी चाहिये, क्योंकि फसल की प्रारम्भिक अवस्था में एक विषैला पदार्थ धूरीन पाया जाता है, जो पशुओं के स्वास्थ्य पर बुरा असर डालता है। एक कटाई वाली किस्मों में 60-75 दिन एवं बहु कटाई वाली किस्मों में प्रथम कटाई 50-55 दिन पर तथा शेष कटाइयाँ 30 दिन के अन्तराल पर करें। ज्वार की हरा चारा फसल से 500-600 किंवटल प्रति हैक्टेयर हरा चरा प्राप्त होता है।

बाजरा

बाजरा खरीफ मौसम की अत्याधिक सूखा सहनशील फसल है। इसे हल्की क्षारीय मृदा में भी उगा सकते हैं।



उन्नत किस्में:— राज बाजरा चरी-2, जाइंट बाजरा, अविका बाजरा चरी-19, नरेन्द्र बाजरा-3 व प्रो एग्रो-1 आदि।

खेत की तैयारी:— मक्का व ज्वार चारा फसल के समान करें।

बुवाई की विधि:— बाजरा की हरा चारा फसल हेतु बीज दर 10-12 किग्रा प्रति हैक्टेयर पर्याप्त रहती है। बुवाई पूर्व बीजोपचार करना चाहिए, इसके लिए बीजों को 2.0 ग्राम थायरम या बाविस्टीन तथा 5 मिली क्लोरोपाइरीफॉस दवा प्रति किग्रा बीज की दर से उपचारित करना चाहिए। बीजों को कतार से कतार 25-30 सेमी दूरी रखते हुए 1.5-2.0 सेमी गहराई पर बोना चाहिए।

पोषक तत्व प्रबन्धन:— सामान्यतः नत्रजन 60-80 किग्रा, फॉस्फोरस 40-60 किग्रा प्रति हैक्टेयर की दर से तथा अन्य उर्वरक आवश्यकतानुसार प्रयोग करें। नत्रजन की दो तिहाई मात्रा तथा फॉस्फोरस की सम्पूर्ण मात्रा बुवाई के समय तथा नत्रजन तत्व की शेष एक तिहाई मात्रा बुवाई के 30-35 दिन पश्चात् भूमि में ऊरें।

सिंचाई प्रबन्ध:— खेत में पलेवा दे कर बुवाई करें। वर्षा नहीं होने की स्थिति में 15-16 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करें।

खरपतवार नियंत्रण:— बाजरे की हरा चारा फसल में बुवाई के तीसरे व चौथे सप्ताह तक खेत में निराई-गुड़ाई कर खरपतवार निकालें। जिन खेतों में खरपतवारों की अधिक समस्या रहती है, वहाँ एट्राजीन खरपतवारनाशी दवा 0.5 किग्रा सक्रिय तत्व की मात्रा को 800 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टेयर की दर से बुवाई के तुरन्त बाद समान रूप से छिड़काव करें।

कीट प्रबन्धन:— शूट फलाई कीट के नियंत्रण के लिए डाइमिथोएट 30 ई.सी. 500 मिली प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

कटाई एवं उपज:— एक कटाई वाली किस्मों में 50 प्रतिशत फूल आने अथवा बुवाई के 60-65 दिन में तथा बहुकटाई वाली किस्मों में पहली कटाई फूल आना शुरू होते ही अथवा बुवाई के 55-60 दिन पर करे

तथा बाद की कटाइयाँ 35-40 दिन के अन्तराल पर करें। एकल कटाई वाली फसल से 300-400 किंवटल तथा बहुकटाई वाली किस्मों से 400-550 किंवटल प्रति हैक्टेयर हरा चरा प्राप्त होता है।

लोबिया

लोबिया जल्दी बढ़वार करने वाली दलहनी चारा फसल है, जिसमें 20-24 प्रतिशत प्रोटीन पाई जाती है।



उन्नत किस्में:— बुन्देल लोबिया-1, 2 व 4, जी.एफ. सी.-1, 2, 3 व 4, सिरसा-10, यू.पी.सी.-5286, 5287, 618 व 622, कोहिनूर तथा ई.सी.-4216 आदि।

खेत की तैयारी:— दो जुताई करके पाटा लगा कर खेत तैयार करें। हरे चारे का अधिक उत्पादन लेने के लिए बुवाई के एक माह पूर्व व प्रथम जुताई के समय 4-5 टन गोबर की खाद या कम्पोस्ट खाद प्रति हैक्टेयर की दर से खेत में डालें। अन्तिम जुताई के समय अथवा बुवाई पूर्व दीमक की रोकथाम हेतु 2 प्रतिशत मिथाइल पैराथियान 20-25 किग्रा प्रति हैक्टेयर की दर से भूमि में मिलावें।

बुवाई की विधि:— लोबिया की खरीफ चारा फसल का उपयुक्त समय जुलाई माह है। इसकी बीज दर 40 किग्रा प्रति हैक्टेयर पर्याप्त रहती है। बुवाई पूर्व बीजोपचार करना लाभकर रहता है, इसके लिए 3.0 ग्राम थायरम या टोपसिन-एम प्रति किग्रा बीज की दर से एवं राइजोबियम कल्चर तीन पैकेट प्रति हैक्टेयर की दर से उपचारित करना चाहिए। बीजों को कतार से कतार 25-30 सेमी दूरी रखते हुए बोया जाना चाहिए।

पोषक तत्व प्रबन्धन:— सामान्यतः नत्रजन 60-80 किग्रा तथा फॉस्फोरस 40-60 किग्रा प्रति हैक्टेयर की दर से खेत में ऊरें। मृदा जाँच की सिफारिश या आवश्यकतानुसार अन्य पोषक तत्वों का प्रयोग करें।

सिंचाई प्रबन्ध:— खेत में पलेवा दे कर बुवाई करें। वर्षा नहीं होने की स्थिति में 10-15 दिन के अन्तराल में सिंचाई करें। फसल कटाई के 3-5 दिन पूर्व सिंचाई करें, जिससे कि नई चारा फसल को बोया जा सके।

खरपतवार नियंत्रण:— लोबिया की हरा चारा फसल में बुवाई के 20-25 दिन बाद एक निराई-गुड़ाई पर्याप्त हैं। जिन खेतों में खरपतवारों की अधिक समस्या रहती है, वहाँ बुवाई के 25 दिन बाद इमाजेथापर खरपतवारनाशी दवा 1.0 किग्रा प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

कटाई एवं उपज:— लोबिया की कटाई 50 प्रतिशत पुष्पावस्था पर करें, जिससे 250-350 किंवटल प्रति हैक्टेयर हरा चरा प्राप्त होता है।

ग्वार

ग्वार शुष्क एवं अर्द्धशुष्क क्षेत्रों में उगाई जाने वाली बहुउद्देशीय दलहनी हरे चारे की फसल है। जिसमें 15-20 प्रतिशत प्रोटीन पाई जाती है।

उन्नत किस्में:— आर.जी.सी.-986, मरूग्वार, बुन्देल ग्वार-1, 2 व 3, ग्वार-80, एफ.एस.-277, एच.जी.-75 व 182 तथा एच.एफ.जी.-119 व 156 आदि।

खेत की तैयारी:— लोबिया चारा फसल के समान करें।

बुवाई की विधि:— ग्वार की चारा फसल के लिए बीज दर 38-40

किग्रा प्रति हैक्टेयर पर्याप्त रहती है। बुवाई पूर्व बीजोपचार करना लाभकर रहता है, इसके लिए बीजों को 2.0 ग्राम बाविस्टीन प्रति किग्रा बीज की दर से एवं राइजोबियम कल्चर तीन पैकेट प्रति हैक्टेयर की दर से उपचारित करना चाहिए। बीजों को कतार से कतार 25 सेमी दूरी रखते हुए बोया जाना चाहिए।



पोषक तत्व प्रबन्धन:— ग्वार की चारा फसल के लिए नत्रजन 20-25 किग्रा तथा फॉस्फोरस 30-40 किग्रा प्रति हैक्टेयर की दर से खेत में ऊरें तथा आवश्यकतानुसार अन्य पोषक तत्वों का प्रयोग करें।

सिंचाई प्रबन्ध:— खेत में पलेवा दे कर बुवाई करें। वर्षा नहीं होने की स्थिति में 15-20 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करें।

खरपतवार नियंत्रण:— ग्वार की हरा चारा फसल में बुवाई के 20-25 दिन बाद एक निराई-गुड़ाई करें।

कटाई एवं उपज:— फसल कटाई पुष्पावस्था या फली आने की अवस्था पर (बुवाई के 60-75 दिन बाद) करनी चाहिए। इस प्रकार ग्वार से 300-350 किंवटल प्रति हैक्टेयर हरा चरा प्राप्त होता है।

बहुवर्षीय घासों

अंजन घास

यह एक बहुवर्षीय घास है। जो अधिक पौष्टिक एवं विभिन्न परिस्थितियों के अनुकूल तथा कम वर्षा वाले शुष्क एवं अर्द्धशुष्क क्षेत्रों के लिए बहुत अच्छी चारा उत्पादक घास है।

भूमि तथा खेत की तैयारी:— अंजन घास को सभी प्रकार की भूमि में सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है लेकिन अच्छे जल निकास वाली हल्की भूमि सर्वोत्तम होती है। 2-3 जुताई हैरो या कल्टीवेटर से करके पाटा कर देना चाहिए।

खाद एवं उर्वरक:— अच्छी पैदावार के लिये 10 ट्रॉली गोबर की खाद जुताई के समय खेत में डाल कर अच्छी तरह मिला देना चाहिए। साथ ही 30 किग्रा. यूरिया 30 किग्रा फास्फोरस भी प्रति हैक्टेयर की दर से डालना चाहिए। बुवाई के एक माह बाद 30 किग्रा यूरिया प्रति हैक्टेयर की दर से लाइनों के बीच में डालने से पैदावार अच्छी मिलती है।

उन्नत प्रजातियाँ:— आर.सी.सी.बी.-2, काजरी-75, एवं बुंदेल अंजन-1 व 3

रोपाई:— जब नर्सरी की पौध 4 से 6 सप्ताह की एवं 10-15 से.मी ऊँची हो जाये तो पौध को सावधानीपूर्वक पौधशाला से निकाल कर 50 से.मी. पंक्ति से पंक्ति तथा 50 से.मी. पौध से पौध की दूरी पर मानसून में रोपाई करें। सीधे बीज द्वारा बुवाई के लिए 3-4 किग्रा बीजों को 50 सेमी x 50 सेमी की दूरी पर कल्टीवेटर से बनाए कूडों में बीज डालकर

बुवाई की जा सकती है। परन्तु जहाँ तक सम्भव हो सके नर्सरी तैयार कर पौध रोपाई करें।

सिंचाई:— पौध की रोपाई अथवा बुवाई करने के तुरन्त बाद सिंचाई करनी चाहिए। उसके पश्चात् समय-समय पर सिंचाई करते रहें, 14 से 15 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करना उपयुक्त रहता है।

निराई गुड़ाई :— सामान्यतः खरपतवारों को समय-समय पर निकालते रहें। प्रथम वर्ष में दो बार निराई-गुड़ाई करना लाभकारी रहता है।

कटाई एवं उपज:— अंजन घास से प्रति वर्ष 800-1000 किंवटल प्रति हैक्टेयर हरा चरा प्राप्त किया जा सकता है। प्रथम वर्ष में एक कटाई करनी चाहिए बाद के वर्षों में 40-45 दिन के अन्तराल पर कटाई करते रहना चाहिए। अंजन घास के बीज उत्पादन के लिये सितम्बर माह में घास की एक कटाई करके फसल को बीज के लिए छोड़ दिया जाता है इस प्रकार 1-2 किंवटल बीज प्रति हैक्टेयर प्राप्त किया जा सकता है।

चारागाह, वृक्ष एवं झाड़ियाँ

छायादार वृक्षों में बबूल, सुबबूल, अरडू, सरस, खेजड़ी व रोहिड़ा इत्यादि वृक्षों तथा झरबेरी व करोंदा जैसी झाड़ियाँ के रोपण का उपयुक्त समय वर्षा काल है। मानसून शुरू होते ही चारागाह भूमि में सेवण, धामन तथा ग्रामना जैसी बहुवर्षीय घासों के बीजों की बुवाई करें।

प्रदेश में प्रमुख फसलों से दाना व सूखा चारा की उपलब्धता का आकलन

राजस्थान का 61 प्रतिशत क्षेत्र मरुस्थलीय है तथा इसके 3/4 भाग में बारानी खेती होती है। राजस्थान की खेती मानसून आधारित है। इस वर्ष मानसून गत वर्ष के मुकाबले कमजोर रहने के कारण सूखे चारे तथा दाने की उपलब्धता पर असर दिखाई दिया। कृषि विभाग राजस्थान के द्वारा फसलवार, क्षेत्र, उत्पादन एवं उत्पादकता के अग्रिम अनुमान वर्ष 2016-17 एवं 2017-18 के आंकलन अनुसार इस वर्ष में गत वर्ष के मुकाबले सूखे चारे की उपलब्धता में आंशिक कमी (-2.22 %) रही। वर्ष 2017-18 में पिछले वर्ष के मुकाबले कम बुवाई क्षेत्र के कारण दाना उत्पादन में कमी गेहूँ (-11.30 %), ज्वार (-13.79 %), छोटे धान्य (-32.30 %), ग्वार (-11.39 %) तथा सोयाबीन (-5.48 %) इत्यादि फसलों में दर्ज की गई। बाजरा फसल के उत्पादकता में कमी रहने के कारण दाना उत्पादन -9.71 प्रतिशत कम रहा। इस फसल का वर्ष 2016-17 में प्रति हैक्टेयर उत्पादन 1001 किलोग्राम था तथा वर्ष 2017-18 में उत्पादकता 886 किग्रा प्रति हैक्टेयर रही। मक्का तथा कुल दलहन फसलों की उत्पादकता अच्छी रहने के कारण दाना उत्पादन में वृद्धि क्रमशः 22.42 तथा 7.11 प्रतिशत दर्ज की गई। सरसों के उत्पादन में आंशिक कमी (-2.28 %) रही, जबकि कपास फसल के बुवाई क्षेत्र में वृद्धि होने के कारण उत्पादन में 21.23 प्रतिशत बढ़ोतरी दर्ज की गई। भारतीय मौसम विभाग ने आगामी मानसून के सामान्य रहने की सम्भावना व्यक्त की है। अतः किसान भाई अधिक उत्पादक व सूखा सहन किस्मों का चयन करें तथा पशुओं के लिए हरे चारे की उपलब्धता बनाये रखने के लिए उपयुक्त फसल चक्र अपनाएँ।

खरपतवार की रोकथाम से बढ़ेगी चारा फसलों की गुणवत्ता एवं उपज

प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, दिनेश आचार्य एवं महेन्द्र सिंह मनोहर

पशुधन चारा संसाधन प्रबन्धन एवं तकनीक केन्द्र, राजुवास, बीकानेर

फसलों को कीट, रोग, खरपातवार तथा अन्य जैविक कारकों द्वारा हानि पहुंचती है। हमारे देश में फसलों को सर्वाधिक हानि (33-35 प्रतिशत) अकेले खरपातवार द्वारा होती है। आमतौर पर यह माना जाता है कि चारा फसलों में खरपातवार की रोकथाम का महत्व नहीं है, क्योंकि ये हरे चारे के विकल्प के रूप में काम में आते हैं। परन्तु देखा गया है कि इनके कारण फसल की पैदावार तथा चारे की गुणवत्ता में कमी आती है। खरपातवारें चारा फसलों के साथ जल, स्थान, सूर्य प्रकाश तथा पोषक तत्वों के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं तथा ये मृदा से पोषक तत्वों के अधिकांश भाग को शोषित कर लेते हैं। जिससे इन पोषक तत्वों की चारे में कमी हो जाती है तथा स्वाद में भी कमी आ जाती है। अतः चाहे अनाज वाली फसलें हो अथवा चारे वाली फसलें, हमें खरपातवार की रोकथाम के उपाय करने चाहिए।

खरपातवार क्या है ?

खरपातवार वे अनैच्छिक पौधे होते हैं, जो अनचाहे ही हमारे खेतों में फसलों के साथ-साथ उग जाते हैं। ये पौधे सामान्यतः जंगली प्रजाति के होते हैं जैसे कि हिरणखुरी, बथुआ, जंगली चौलाई तथा गाजर घास आदि। खरपातवार अन्य फसलों के पौधे भी हो सकते हैं जो कि मुख्य फसल के साथ उग जाते हैं, जैसे जौ फसल के साथ खेत में पूर्व में ली गई खरीफ फसल के पौधों का उग आना या बीजों के साथ मिश्रित अन्य फसलों के बीजों का उगना।

खरपातवार से हानियां:-

❖ कुछ खरपातवार पशु के खाने योग्य नहीं होती जैसे अमरबेल, जंगली नागफनी, गाजर घास, औरोबैन्की, धतुरा एवं लेन्ताना आदि। भूखे पशुओं द्वारा कासनी, जंगली प्याजी या जंगली लहसून आदि खरपातवार को चर लेने से उनके दूध में दुर्गन्ध आने लगती है तथा गाजर घास खाने से उनके दूध में कड़वाहट आने लगती है। चारा फसलों में उत्पन्न अनेक खरपातवार पशु स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालती हैं, जैसे कि बरू घास के कल्ले फूटते समय पशु यदि इसे चर लेते हैं तो पशु पर इसका जहरीला प्रभाव पड़ता है, इसी प्रकार धतुरा खाने से पशु की मृत्यु भी हो सकती है।

❖ गोखरू, लटजीरा व झड़बेरी के काँटें भेड़ व बकरी के बालों में चिपकर ऊन व बालों की गुणवत्ता को कम कर देते हैं। इससे इनका बाजार मूल्य कम प्राप्त होता है।

❖ कुछ खरपातवार जब चारा फसल खेत में नहीं हो तब ये फसलों के हानिकारक कीटों व रोगाणुओं के लिए शरणस्थली का काम करते हैं। जैसे मक्का पर लगने वाली डाउनीमिल्ड्यू (तुलासिता रोग) का कवक कांस खरपातवार पर, जौ व जई की स्मट (रोली रोग) के रोगाणु जंगली जई तथा फसलों के एफीड हिरणखुरी खरपातवार पर शरण लेते हैं।

❖ बहुत-सी खरपातवार मृदा में अपनी जड़ों द्वारा विषैले पदार्थ छोड़ती है जो आगे बोई जाने वाली फसलों के लिए बहुत हानिकारक होते हैं। जैसे कि क्वैक घास खरपातवार की जड़ों से निकले रसायन कुछ अनाज व दलहनी फसलों के अंकुरण व वृद्धि पर कुप्रभाव डालते हैं। अधिकांश बहुवर्षीय खरपातवार, कांस व गाजर घास से प्रभावित खेतों में इस प्रकार की समस्या पायी जाती है। इसे खरपातवार का एलीलोपेथी प्रभाव कहा जाता है।

❖ खरपातवार चारा फसलों पर परपोषी बनकर वृद्धि करते हैं, जिससे पौधे कमजोर पड़ जाते हैं तथा चारा उत्पादन घट जाता है। जैसे कि अमरबेल एक पूर्ण तना परजीवी खरपातवार है, इसकी प्रमुख पोषी फसल रिजका व बरसीम है। इसी प्रकार रूखड़ी एक अल्प जड़ परजीवी खरपातवार है, इसकी प्रमुख पोषी फसल ज्वार, बाजरा, व मक्का है।

खरपातवार की रोकथाम के उपाय:-

❖ खेत में गोबर की कच्ची खाद का प्रयोग नहीं करना चाहिए क्योंकि इस खाद में पशुओं द्वारा अपचित खरपातवारों के बीजों को मल द्वारा त्यागा गया होता है, जो खाद के साथ खेत में पहुंच कर अनुकूल वातावरण मिलने पर उग आते हैं।

❖ बीजाई पूर्व खेत में पलेवा करना चाहिए। इस प्रकार नमी पाकर खेत में मौजूद खरपातवार के बीज अंकुरित हो जाते हैं। इन्हें नष्ट करने के लिए जुताई करें तथा पाटा चला कर खेत तैयार करें।

❖ चारा फसलों के साफ सुथरे शुद्ध बीजों का प्रयोग करना चाहिए। किसान भाई बीज उत्पादन वाले खेत के उन हिस्सों से बीजों का संग्रह न करे, जहाँ खरपातवार का प्रकोप अधिक हो।

❖ बीजों को खरपातवार से मुक्त करने के लिए बुवाई से पूर्व बीजोपचार करना चाहिए। जैसे रिजके के बीजों में अमरबेल के मिश्रित बीजों को पृथक करने लिए रिजके के बीजों को 2 प्रतिशत नमक के घोल में तथा बरसीम के बीजों से कासनी के बीजों को अलग करने के लिए 5 प्रतिशत नमक के घोल का प्रयोग करें। घोल में से खरपातवार के बीजों को निथार कर अलग कर लेते हैं तथा घोल में नीचे बैठे फसल के बीजों को साफ पानी में धो कर सूखा कर बुवाई के काम में लेते हैं।

❖ बीजों को कतारों में बोना चाहिए क्योंकि छिड़काव विधि से बोए गए खेतों में निराई-गुड़ाई करने में कठिनाई आती है। कतारों में बोई गयी फसल में 25-30 दिन पश्चात् निराई-गुड़ाई कर खेत को खरपातवार मुक्त करना चाहिए।

❖ नहरों एवं सिंचाई खालों के किनारों लगे खरपातवार को नष्ट करना चाहिए क्योंकि इनके बीज सिंचाई जल के साथ खेतों में पहुंच जाते हैं।

❖ उपयुक्त फसल चक्र को अपनाकर खरपातवार नियंत्रण के लिए सबसे कारगर उपाय है। जिन खेतों में अमरबेल की समस्या है वहां कुछ वर्षों के लिए रिजका व बरसीम के स्थान पर अन्य रबी चारे फसलों की बुवाई करनी चाहिए। इसी प्रकार से ओरोबैन्की तथा स्ट्राइगा जैसी परजीवी खरपातवार की रोकथाम हेतु इनकी पोषी फसलों की बुवाई को खरपातवार प्रभावी क्षेत्र में दो से तीन वर्षों के लिए टाल देनी चाहिए।

❖ जहाँ तक सम्भव हो चारा फसलों में खरपातवार की रोकथाम हेतु रासायनिक दवाओं का प्रयोग नहीं करना चाहिए। परन्तु खरपातवार का प्रकोप अधिक है तो इनका समन्वित प्रबंधन करना चाहिए। इसके लिए यांत्रिक, रासायनिक तथा जैविक तीनों विधियों के तालमेल या संयुक्त प्रयोग द्वारा आर्थिक क्षति स्तर को कम करने का उपाय करना चाहिए। यदि चारा फसलों में रसायनों का छिड़काव किया गया है तो उन्हें पांच से सात दिन पहले नहीं काटना चाहिए। इन उपायों को काम में लाने से खेत धीरे-धीरे खरपातवार मुक्त बनेगा तथा हम अच्छी गुणवत्ता वाली चारा फसलों की अधिक उपज प्राप्त कर सकेंगे।

वर्षा ऋतु में पशुओं को रोगों से बचाएँ

डॉ. दीपिका धूड़िया

सहायक प्राध्यापक, पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर

बारिश के आते ही पशुओं को काफी आराम मिलता है। मई-जून की तेज गर्मी में जहाँ पशुओं को तापघात से सामना करना पड़ता है, वही चारा-दाना खाने की क्षमता में कमी के कारण पशुओं के उत्पादन में भी कमी आ जाती है। इन सभी समस्याओं से बारिश के मौसम में पशुओं को राहत मिलती है। बारिश से पशुओं के लिए चरागाहों व जोहड़ में पानी की व्यवस्था हो जाती है तथा पशुओं के लिए हरी-हरी घास व चारे का भी प्रबन्ध हो जाता है। वैसे तो बारिश ना केवल मानव के लिए बल्कि पशुओं के लिए वरदान है परन्तु बारिश से कुछ नुकसान भी पशुओं में हो सकते हैं। बारिश के मौसम में पशुशाला की सफाई पर ध्यान न रखा जाए तो पशुओं में रोगाणुओं का आक्रमण बढ़ जाता है तथा पशुओं में बीमारियों की सम्भावना बढ़ जाती है। बारिश से पशुओं को गर्मी से तो राहत मिल जाती है परन्तु दूसरी ओर पशुओं में बीमारियों के होने का खतरा भी बढ़ जाता है। ऐसी स्थिति में पशुओं के खान-पान एवं प्रबन्धन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता रहती है। बारिश का मौसम शुरू होते ही गौपशुओं विशेषकर गाय व भैंसों में रोगों के होने की सम्भावना बढ़ जाती है। गाय-भैंसों में गलघोंटू व लंगड़ा बुखार जैसे संक्रामक रोग बरसात के मौसम में अथवा इसके बाद आते हैं। बारिश से पूर्व मई-जून के माह में इन रोगों के बचाव के लिए रोग-प्रतिरोधक टीका अवश्य लगवा ले। बारिश के मौसम में पशुशाला में काफी गन्दगी इकट्ठी हो जाती है। गोबर व मूत्र के कारण पशुशाला में गन्दगी व कीचड़ बढ़ने से पशुओं के फिसलने का डर रहता है। ऐसी स्थिति में पशुशाला को नियमित रूप से साफ-सुथरा रखें। फर्श की रोज सफाई करें। सप्ताह में एक या दो बार फिनायल या ऐन्टीसेप्टिक से फर्श व पेशाब की नालियों की सफाई करने से पशुशाला में रोगाणुओं

का आक्रमण कम हो जाता है व रोगाणु नष्ट भी हो जाते हैं। बारिश में पशु यदि बीमार हो जाये तो उसे अन्य पशुओं से अलग कर दे और उसका पशुचिकित्सक से तुरन्त ईलाज करवायें ताकि अन्य पशुओं में रोग फैलाने की सम्भावना कम रहे। इस मौसम में गन्दगी से होने वाले मक्खी-मच्छर व कीट-पतंगें पशु रोगों को एक-दूसरे में फैलाने में वाहक का कार्य करते हैं। अतः साफ-सफाई का विशेष ध्यान देने की जरूरत है। बारिश के महिनो में हरी ताजी ज्वार पशुओं के लिए उपलब्ध होती है। हरी ज्वार जिसकी कई बार सिंचाई नहीं हुई हो तथा लम्बाई में छोटी हो तो उसे पशुओं को कभी नहीं खिलाना चाहिए। ऐसी हरी ज्वार के चारे में हाइड्रोसाइनिक अम्ल होता है जो पशुओं के लिए नुकसान दायक होता है तथा पशुओं की मृत्यु भी हो सकती है। ऐसी ज्वार को एक-दो सिंचाई के बाद या अच्छी बारिश होने के बाद ही पशुओं को खिलाना चाहिए। बारिश के मौसम में पशुओं को गंदा पानी नहीं पीने दे अन्यथा पशुओं के पेट में कीड़े पैदा हो सकते हैं। ये पेट के कीड़े पशुओं का भोजन तो खाते ही हैं साथ ही रोगों का कारण भी बनते हैं। इस मौसम में गर्मी और उमस भी होती है, ऐसी स्थिति में पशुओं को दिन में दो से तीन बार साफ पानी पिलाएँ। बरसात से पहले कृमिनाशक दवा की खुराक अवश्य दें। बारिश के मौसम में जहाँ तक सम्भव हो पशु को चारा सुखाकर देना चाहिये। बारिश में भीगे चारे को अधिक दिन रखने पर उसमें फफुंद होने की सम्भावना रहती है इसलिए भीगे चारे को समय-समय पर धूप दिखाते रहे। इस मौसम में पशुओं का दूध उत्पादन बढ़ना शुरू हो जाता है, अतः पशुओं को आवश्यकतानुसार सन्तुलित आहार देना चाहिए व इसमें प्राटीन की उचित मात्रा होनी चाहिए।

मुख्य समाचार

एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर में 39 पशुपालक हुए लाभान्वित

वैटनरी विश्वविद्यालय के पशुधन चारा संसाधन प्रबन्धन एवं तकनीक केन्द्र बीकानेर द्वारा दिनांक 29 मई, 2018 को बीकानेर के गाढ़वाला ग्राम में उन्नत पशुपोषण एवं हरा चारा उत्पादन विषय पर एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। केन्द्र के प्रमुख अन्वेषक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि पशुओं से अधिक उत्पादन लेने के लिए पशु के खान-पान का उचित प्रबन्धन करना होगा। पशु आहार में हरा चारा एक महत्वपूर्ण घटक है, अतः किसान भाइयों को वर्षभर हरे चारे की उपलब्धता बनाए रखने लिये हरा चारा उत्पादन के साथ-साथ इसे साइलेज बना कर संरक्षित करने की जानकारी प्रदान की गई। प्रशिक्षण शिविर में केन्द्र के विशेषज्ञ श्री दिनेश आचार्य एवं श्री महेन्द्र सिंह मनोहर ने हरा चारा उत्पादन, अजोला उत्पादन तकनीक, हरे चारे को संरक्षण रखने की सायलो बैग तकनीक तथा यूरिया मोलासिस मिनरल ब्लॉक तकनीक के बारे में पशुपालकों को तकनीकी जानकारियाँ दी। इस प्रशिक्षण शिविर में कुल 39 पशुपालकों को लाभान्वित किया गया। इस कार्यक्रम में कृषक मित्र गाढ़वाला श्री भागीरथ गोदारा भी उपस्थित रहे।



मुर्गियों के खान-पान का रखें ख्याल

डॉ. एल. एन. सांखला एवं डॉ. लोकेश टाक

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर

गर्मी में मुर्गी पालन करने वालों के लिए आवश्यक है कि तापमान की तेजी से मुर्गियों को बचाया जाए, क्योंकि गर्मी अधिक बढ़ने से मुर्गियों की मृत्यु दर बढ़ सकती है। चूजों में गर्मी झेलने की क्षमता अधिक होती है और करीब 42 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान पर चूजे आसानी से रह लेते हैं। वयस्क मुर्गियों को गर्मी में अधिक परेशानी होती है। गर्मी बढ़ने पर चूजों को बाड़े में ही रखें और खिड़की को पर्दे से आधा ढक दें, जिससे सीधी धूप से बचाव हो सके और हवा का संचरण भी बना रहे। बाड़े में ताजे पानी की आपूर्ति हमेशा रखें। इससे मुर्गियों को गर्मियों से निपटने में मदद मिलेगी। आंगन में पाली जाने वाली मुर्गियों के लिए अगर संभव हो तो पानी का नल खुला छोड़ दें। इससे मुर्गियां अपनी कलगी गीली कर लेती हैं, जिससे पूरे शरीर का तापमान नियंत्रित रहता है। गर्मियों में पानी के बर्तनों की संख्या बढ़ा दें, क्योंकि गर्मी के मौसम में मुर्गियां पानी के बर्तन के चारों ओर बैठ जाती हैं जिससे दूसरी मुर्गियों को पानी नहीं मिल पाता है। तेज गर्मी में अगर मुर्गियों को एक घंटे भी पानी न मिले तो हीट स्ट्रोक से उनकी मृत्यु हो सकती है। धातु के बर्तन में पानी जल्दी गर्म हो जाता है और आमतौर पर मुर्गियां गर्म पानी नहीं पीती हैं। इसलिए अगर धातु के बर्तन में पानी रखा है, तो थोड़ी-थोड़ी देर में उसमें ताजा पानी भरते रहें। अगर हो सके तो मिट्टी के बर्तन में पानी रखें। मुर्गियों के शेड में अधिक भीड़ होने से गर्मी बढ़ेगी और मुर्गियों में हीट स्ट्रोक का अंदेशा बढ़ेगा। मुर्गियों के शेड में जरूरत से अधिक मुर्गियां रखना हानिकारक होता है। इसके अलावा, गर्मियों में कमरे में एक्जॉस्ट फैन लगा कर हवा का सही संचरण रखें। अंडे देने वाली मुर्गियों में तापमान सहने की क्षमता मांस के लिए पाली जाने वाली मुर्गियों की तुलना में अधिक होती है। ब्रॉयलर फार्म में एक वर्ग फीट स्पेस प्रति चूजे के अनुसार स्थान दिया जाता है और लेयर के

लिए 2.5-4.5 वर्ग फीट प्रति बड़ी मुर्गी के हिसाब से जगह की जरूरत होती है। यानि 30 फीट×100 फीट (कुल 3000 वर्ग फीट) के शेड में मुर्गी पालक 3000 ब्रायलर और 1200-1400 लेयर रख सकते हैं। इसके अलावा, मुर्गी के शेड की छत गर्मी कम करने के लिए छत पर पुआल या घास आदि डाल दें और छत पर सफेदी करा दें। सफेद रंग ऊष्मा को कम सोखता है, जिससे छत ठंडी रहती है। आधुनिक मुर्गी फार्म में गर्मी से बचाव के लिए स्प्रिंकलर या फॉगर प्रणाली भी लगी होती है, जिससे पानी की फुहारें निकलती रहती है। स्प्रिंकलर के साथ पंखे भी जरूर लगे होने चाहिए और कमरे की खिड़की भी खुली होनी चाहिए, जिससे कमरा हवादार और ठंडा रहेगा। कई मुर्गीपालक शेड की खिड़कियों पर तेज गर्मी के समय टाट को गीला करके लटका देते हैं। यह गर्मी रोकने के लिए अच्छा उपाय है, लेकिन इसमें ध्यान रखें कि टाट खिड़की की जाली से पूरी तरह चिपकी न हो, टाट और खिड़की की जाली में करीब एक से डेढ़ फीट की दूरी हो। इससे हवा का संचरण भी बना रहेगा और गीले टाट से हवा ठंडी भी रहेगी। इसके अलावा, मुर्गियों को दिए जाने वाले दाने को गीला कर सकते हैं। गीला दाना ठंडा होगा जिसका मुर्गियां ज्यादा सेवन करेगी। परंतु ध्यान रखें कि गीला किया दाना शाम तक खत्म हो जाए वरना उसमें बदबू आ सकती है। दाने की बोरी को कभी भी गीला न करें। अगर किसी मुर्गी में गर्मी लगने के लक्षण दिखाई दें, तो उसे धीरे से उठा कर पानी से एक डुबकी देकर छांव में रख दें और एलेक्ट्रॉल दें, स्वस्थ होने पर वापस बाड़े में डाल दें। यह प्रक्रिया तुरंत की जानी आवश्यक है। देर होने पर मुर्गी मर सकती है। फार्म में बहुत ज्यादा मुर्गियां नहीं पालें हो सके तो शेड की क्षमता से 20 प्रतिशत कम मुर्गियां रखें। अगर मुर्गीपालक उपयुक्त निर्देशों का पालन करेंगे तो गर्मी में मुर्गीपालन से अधिक से अधिक लाभ कमा सकेंगे।

मार्गदर्शन : प्रो. बी. आर. छीपा, कुलपति

प्रधान सम्पादक
प्रो. राजेश कुमार धूड़िया
प्रमुख अन्वेषक

संकलन सहयोगी
डॉ. दीपिका धूड़िया
सहायक प्राध्यापक
दिनेश आचार्य
टीचिंग एसोसिएट
महेन्द्र सिंह मनोहर
टीचिंग एसोसिएट

तकनीकी मार्गदर्शन
प्रो. त्रिभुवन शर्मा
अधिष्ठाता, सी.वी.ए.एस., बीकानेर



भारत सरकार की सेवार्थ

बुक-पोस्ट

सेवा में

सम्पर्क सूत्र : प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, प्रमुख अन्वेषक, पशुधन चारा संसाधन प्रबन्धन एवं तकनीक केन्द्र, राजुवास, बीकानेर
फोन : 09414283388, email: lfrmtc.rajuvas@gmail.com; dhuriark12@gmail.com

पशुचिकित्सा व पशु विज्ञान की जानकारी प्राप्त करने
के लिए राजुवास के टोल फ्री नम्बर पर सम्पर्क करें।



1800 180 6224

स्वत्वाधिकार प्रमुख अन्वेषक, पशुधन चारा संसाधन प्रबन्धन एवं तकनीक केन्द्र, राजुवास, बीकानेर (राज.) के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर से मुद्रित एवं पशुधन चारा संसाधन प्रबन्धन एवं तकनीक केन्द्र, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. राजेश कुमार धूड़िया